आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2018-20

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 7 अंक : 05 जनवरी-2020 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति सन्देश

नव वर्ष में जैविक पशुधन उत्पाद और मूल्य संवर्द्धन का लेवें संकल्प

प्रिय किसान, पशुपालक भाईयों और बहनों!

राम-राम सा!

नव वर्ष का शुभ आगमन आपकी सुख, शान्ति और समृद्धि में अभिवृद्धि की मंगल-कामना के साथ, मेरी हार्दिक बंधाई।

वर्तमान में पशुधन उत्पादों का उचित मूल्य और लाभ दिलाने के लिए चंहुओर हर संभव उपाय और प्रयास किए जा रहे हैं। इसके लिए जैविक पशुधन उत्पाद का मूल्य संवर्द्धन और उद्यमिता का विकास किया जाना जरूरी है। वर्तमान समय में जैविक पशुपालन एक अत्यंत लाभदायक व्यवसाय है। जैविक पशुपालन से तात्पर्य है कि पशु का सम्पूर्ण आहार (अधिकांश कृषि उत्पाद के रूप में) संश्लेषित खादों, कीटनाशकों, रासायनिक खरपतवार नाशकों से मुक्त होना चाहिए और पशुओं के रोग उपचार के लिए एलोपैथिक दवाईयों का उपयोग पूर्णतः वर्जित होना चाहिए। वर्तमान समय में दूध, मांस, अण्डा इत्यादि खाद्य पदार्थो के अन्दर विभिन्न प्रकार के एन्टीबायॉटिक, कीटनाशी, पीडकनाशी, खरपतवारनाशी, भारी धातु तत्वों व अन्य कई प्रकार की रासायनिक खादों की अशुद्धियां देखी गई है, जिसका मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। वर्तमान समय में जहां कृषि, पशु व मानव स्वास्थ्य को एक समग्र दृष्टिकोण के साथ देखा जा रहा है और पशुपालन राजस्थान की विषम परिस्थितियों में आजीविका का प्रमुख साधन है, उसकी प्रणाली को जैविक पद्धति की ओर मोड़ा जाना चाहिए। इस कड़ी में राज्य के 8 पशुधन अनुसंधान केन्द्रों को जैविक पशुपालन के मोड़ पर लाने के लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय ने क्रमबद्ध व समयबद्ध तरीके से कार्य भी शुरू किया है जिसकी आज महत्ती आवश्यकता है। इन केन्द्रों की भूमि के जैविक प्रमाणीकरण की भी कार्यवाही अमल में लाई जा रही है। इस संदर्भ में हमने प्रदेश में देशी गौवंश की प्रचुरता को देखते हुए देशी गौवंश के दूध व दुग्ध उत्पादों के प्रति जागरूकता को विकसित करने के लिए छात्र-छात्राओं, किसान, पशुपालकों को प्रसंस्करण कार्यों को बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान महाविद्यालयों में एक देशी गौवंश दूध एवं दुग्ध उत्पाद केन्द्र प्रारंभ किए जा रहे हैं। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर और नवानियां (उदयपुर) में देशी गौवंश दूध एवं दुग्ध उत्पाद केन्द्र शुरू किए गए हैं। स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर में भी यह केन्द्र शीघ्र ही कार्य करना शुरू कर देगा। नव वर्ष में कुछ संकल्प लेकर आगे बढ़ना है। मेरा आप सभी से अनुरोध है कि जैविक खेती और पशुपालन को अपनाने का संकल्प लें क्योंकि यह समस्त जीव-जगत के उत्तम स्वास्थ्य और निरोगी काया के लिए आवश्यक है। जयहिन्द!

(प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा)

माननीय ऊर्जा एवं जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला और उच्च शिक्षा राज्यमंत्री श्री भंवर सिंह भाटी एवं कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा राजुवास दुग्ध पार्लर का लोकार्पण करते हुए

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

-महात्मा गांधी

मुख्य समाचार

ऊर्जा मंत्री डॉ. कल्ला और उच्च शिक्षा मंत्री भाटी द्वारा राजुवास में देशी गौवंश दुग्ध उत्पाद केन्द्र का लोकार्पण

ऊर्जा एवं जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला और उच्च शिक्षा राज्यमंत्री श्री भंवर सिंह भाटी ने 13 दिसम्बर को वेटरनरी विश्वविद्यालय के डेयरी परिसर में देशी गौवंश दुग्ध पार्लर का लोकार्पण किया। इस अवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. कल्ला ने कहा कि गाय हमारी माता है जो जीवन पर्यन्त दूध प्रदान कर हमें स्वस्थ रखती है। दूध के समान कोई औषधि नहीं है। देशी गोवंश का दूध अत्यंत पौष्टिक और स्वास्थ्यवर्द्धक होता है अतः देशी नस्लों का संरक्षण और उनके उत्पादों का पूरा उपयोग किया जाना चाहिये। उच्च शिक्षा राज्य मंत्री श्री भंवर सिंह भाटी ने कहा कि वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा राज्य में देशी गौवंश की नस्लों के संरक्षण और संवर्द्धन का कार्य और जागरूकता का काम सराहनीय है। देशी गौवंश का दूध संकर प्रजातियों के मुकाबले अधिक शुद्धता और गुणवत्ता वाला है। देशी गौवंश दुग्ध पार्लर से आम जन की अपेक्षाओं को पूरा करने में मदद मिलेगी। समारोह की अध्यक्षता करते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि आम जन की अपेक्षाओं के अनुरूप देशी गोवंश दुग्ध पार्लर शुरू किया गया है। देशी गौवंश के दूध और उनके उत्पादों के प्रति आमजन में रूचि पैदा हो रही है परन्तु इनकी उपलब्धता सही तरीके से नहीं हो पा रही है। विश्वविद्यालय द्वारा इसे बढ़ावा देने के लिए देशी गौवंश दुग्ध उत्पाद केन्द्र खोलने की पहल की गई है। केन्द्र खुलने से किसानों और पशुपालकों को उनके दूध का उचित मूल्य और दुग्ध प्रसंस्करण को बढ़ावा मिलेगा। देशी गोवंश दूध की बढ़ती हुई मांग, पालन को बढ़ावा देने के साथ–साथ विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं को अनुसंधान और स्वरोजगार के लिए दूध के प्रसंस्करण कार्यों के लिए प्रेरित किया जा सकेगा।

सांभर में प्रवासी पक्षियों की असामयिक मौत प्रकरण में वेटरनरी विश्वविद्यालय के सार्थक प्रयास व राहत कार्य हुए कारगर

माननीय राज्यपाल महोदय ने सांभर झील में प्रवासी पक्षियों की असामयिक मौत के कारणों की जांच करने, आवश्यक उपचार सुझाने तथा रोकथाम उपाय करने के लिए राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय को निर्देशित किया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने तुरन्त एक्शन लेते हुए इस प्रकरण में राहत के कार्य प्रारंभ करवाए। पक्षियों के मृत्यु की सूचना पर कुलपति ने एक चार सदस्य पशुचिकित्सा वैज्ञानिकों की टीम का गठन प्रो. ए.के. कटारिया का नेतृत्व किया। वैज्ञानिकों की टीम ने 14 नवम्बर, 2019 को सांभर झील क्षेत्र का निरीक्षण किया तथा पक्षियों में फैले रोग के कारणों का मौका–मुआयना किया तथा जांच के सैम्पल लिए। वैज्ञानिकों की टीम ने मौके पर पक्षियों की जांच–पड़ताल और परीक्षण व उनमें पाए गए रोग के लक्षणों के आधार पर पक्षियों की मौत का कारण बोटूलिज्म रोग को माना तथा विस्तृत रिर्पोट प्रस्तुत की। विशेषज्ञों की इस रिर्पोट के अनुसार पशुपालन विभाग प्रवासी पक्षियों में बोटूलिज्म बीमारी के उपचार, रोकथाम और राहत कार्यों में जुट गया। भोपाल स्थित फोरेंसिक लैब की सैम्पल जांच में बर्डफ्लू की नेगेटिव रिर्पोट तथा बरेली स्थित भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा प्रस्तुत अपने जांच प्रतिवेदन में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा प्रस्तुत जांच रिर्पोट की पुष्टि कर दी गई। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा किए गए कार्यों के फलस्वरूप सांभर क्षेत्र में पक्षियों की मौत का सिलसिला रोकने में मदद मिली। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा द्वारा भी सांभर झील के प्रभावित क्षेत्रों का मौका–मुआयना किया तथा राहत कार्यों की जानकारी लेकर आगे के दिशा निर्देश प्रदान किए गए। कुलपति द्वारा काचरोदा स्थित रेस्क्यू सेंटर में राहत कार्यों में लगे पशुचिकित्सकों से चर्चा कर दिशा निर्देश प्रदान किये तथा रेस्क्यू के दौरान ठीक हुए पक्षियों को भी खुले आकाश में मुक्त किया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसधान संस्थान, जयपुर की टीम ने भी सांभर झील के प्रभावित क्षेत्रों में राहत और बचाव कार्यों का अवलोकन किया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुधन चारा संसाधन प्रबन्धन एवं तकनीक केन्द्र, बीकानेर द्वारा बीमार पक्षियों के लिए अधिक प्रोटीन व पूरक अवयवो का उपयोग कर विशेष आहार तैयार कर वहां स्थापित रेस्क्यू केन्द्रों को भिजवाया और पशु आपदा प्रबंधन एवं तकनीक केन्द्र, बीकानेर के विशेषज्ञों ने भी क्षेत्र में राहत कार्यों में योगदान दिया।

कुलपति द्वारा पशुपालक कैलेण्डर -2020 का लोकार्पण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के जनसम्पर्क प्रकोष्ठ द्वारा तैयार राजुवास कैलेण्डर–2020 का लोकार्पण कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने 30 दिसम्बर को किया। कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय की शैक्षणिक, अनुसंधान एवं शिक्षा प्रसार गतिविधियों की अद्यतन जानकारी और पशुपालकों को तकनीकी जानकारी का बहुरंगी राजुवास कैलेण्डर प्रति वर्ष जारी किया जाता है। राजुवास जनसम्पर्क प्रकोष्ठ के समन्वयक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि राजुवास कैलेण्डर में पशुपालकों के लिए मासिक निर्देशिका का प्रकाशन किया गया है जिसमें पशुपालकों के लिए उस माह में वैज्ञानिक हिदायतों और किए जाने वाले पशुपालन संबंधी कार्यों का विवरण शामिल किया गया है। इस कैलेण्डर में वेटरनरी विश्वविद्यालय की समस्त गतिविधियों और कार्यक्रमों का दिग्दर्शन भी किया जा सकता है।

चिकित्सकीय जैव अपशिष्ट मानव और जीवों के लिए घातक : कुलपति विष्णु शर्मा

वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा है कि चिकित्सकीय जैव अपशिष्ट का सही तरीके से निस्तारण करने से मानव और पशु जीवन को बचाया जा सकता है। ये अपशिष्ट संक्रमित होकर मनुष्य और पशुओं में प्राणघातक रोगों का कारण बनते हैं। कुलपति प्रो. शर्मा 6 दिसम्बर को 40 वैज्ञानिकों, पशु चिकित्सकों और तकनीकी अधिकारियों के "पशुजैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के प्रबंधन और निस्तारण" विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण का उद्घाटन कर रहे थे। उन्होंने सभी प्रशिक्षुओं को कहा कि ऐसे जैव अपशिष्ट का निस्तारण पूरी जिम्मेदारी के साथ किया जाना चाहिए। प्रशिक्षण में इस बाबत सभी तकनीक और प्रबंधन की जानकारी दी जाएगी। केन्द्र की प्रमुख अन्वेषक एवं प्रशिक्षण संयोजक डॉ. रजनी जोशी और वेटरनरी महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. राकेश राव ने जैव अपशिष्ट के निस्तारण तरीकों की जानकारी दी। प्रशिक्षण प्रतिभागियों को केन्द्र के द्वारा बनाए गए ऑडियों विजुएल मॉडल का भी अवलोकन करवाया गया। प्रशिक्षण के अंत में विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक प्रो. आर.के. सिंह एवं अधिष्ठाता प्रो. राकेश राव ने प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण–पत्र प्रदान किए।

50 कृषकों ने डेयरी फॉर्म और कुक्कुट पालन से आय बढ़ाने के तरीके जाने

सीकर जिले से आए 50 कृषक और पशुपालकों के दल ने 10 दिसम्बर को वेटरनरी विश्वविद्यालय में राठी गौवंश के डेयरी फॉर्म और कुक्कुटशाला का भ्रमण किया। आत्मा परियोजना के तहत अर्न्तराज्यीय कृषक भ्रमण कार्यक्रम के तहत यहां पहुँचे। कृषकों ने कुक्कुट पालन में गहरी रूचि दिखाते हुए खेती–बाड़ी के साथ–साथ आय बढ़ाने के तरीकों की जानकारी ली। राजुवास के प्रसार शिक्षा निदेशालय के डॉ. अतुल अरोड़ा एवं डॉ. प्रवीण कौशिक ने किसानों को बताया कि देशी मुर्गियों की विभिन्न प्रजातियों का पालन और अंडों की विपणन व्यवस्था से किसान नियमित आय अर्जित कर सकते हैं। खरगोश पालन भी आसानी से करके आय को बढ़ाया जा सकता है। किसानों ने डेयरी में देशी गौवंश राठी के लालन–पालन और उसकी उत्पादन क्षमता के बारे में भी जानकारी ली।

राज्य सरकार के एक वर्ष पूर्ण होने पर राजुवास प्रदर्शनी स्टॉल

राज्य सरकार के कार्यकाल का एक वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष पर विद्याधर नगर, जयपुर में 17 दिसम्बर, 2019 को राज्य स्तरीय प्रदर्शनी एवं किसान सम्मेलन में वेटरनरी विश्वविद्यालय स्तरीय प्रदर्शनी स्टॉल लगाई गई। इस प्रदर्शनी में विश्वविद्यालय द्वारा हेरिटेज जीन बैंक की अवधारणा पर किये गये देशी गौवंश संवर्द्धन एवं उन्नयन कार्यो को मॉडल के द्वारा शिक्षा, प्रसार अनुसंधान, की उपलब्धियों एवं विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई किसानोपयोगी नवीन तकनीकों एवं अन्य गतिविधियों को चार्ट, माडॅल, फ्लेक्स सहित अन्य सामग्री के माध्यम से प्रदर्शित की गई। इस प्रदर्शनी को हजारों किसानों एवं पशुपालकों द्वारा अवलोकन करके पशुपालन की नवीन तकनीकों की जानकारी प्राप्त की।

वेटरनरी विश्वविद्यालय और कृषि विश्वविद्यालय में आपसी सहयोग और समन्वय का हुआ करार

वेटरनरी विश्वविद्यालय और स्वामी केशवानंद राज. कृषि विश्वविद्यालय ने 30 दिसम्बर को आपसी सहयोग और समन्वय के लिए एक करार (एम.ओ.यू.) किया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति सचिवालय में वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा और एस.के.आर.ए.यू. के कुलपति प्रो. आर.पी. सिंह ने करार पर हस्ताक्षर कर दस्तावेज एक–दूसरे को सुपुर्द किए। इस अवसर पर कुलपति प्रो. शर्मा ने कहा कि कृषि और पशुपालन एक दूसरे के पूरक हैं। इस करार के हो जाने से दोनों ही विश्वविद्यालय के

शोधार्थी और शिक्षक पशुपालन और कृषि के क्षेत्र में एक–दूसरे के यहां तकनीकी संसाधनों का उपयोग कर गुणवत्तायुक्त उत्पादन की नवीन तकनीक को जानने का अवसर मिलेगा। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को अपने कार्यों के साझा रूप में करने के सुखद परिणाम किसान और पशुपालक समुदाय के लिए लाभकारी होंगे। इस अवसर पर कुलपति प्रो. सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालयों के आपसी करार से मिलजुलकर कार्य करने के अच्छे परिणाम आयेंगे। वैज्ञानिकों में समन्वय से सामाजिक जरूरतों को पूरा करने में मदद मिलेगी। सामाजिक जरूरतों को पूरा किया जाना सहज हो जाएगा।

पशुपालन आय में वृद्धि की उन्नत तकनीकों पर प्रशिक्षण

राजुवास के पशुधन चारा संसाधन प्रबन्धन एवं तकनीक केन्द्र और उपनिदेशक कृषि एवं पदेन परियोजना निदेशक "आत्मा", बीकानेर के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित प्रशिक्षण में लूनकरणसर तथा बीकानेर तहसील के कुल 30 कृषकों ने भाग लिया। शिविर के समापन सत्र में राजुवास के निदेशक अनुसंधान, प्रो. आर. के. सिंह ने कहा कि राजुवास से जुड़कर अपने दुग्ध उत्पादन में वृद्धि के साथ–साथ उसकी गुणवत्ता बढ़ाने और दुग्ध उत्पादों के मूल्य सर्वधंन से अपनी आय में वृद्धि के वैज्ञानिक उपाय करें। उपपरियोजना निदेशक "आत्मा" मुकेश गहलोत एवं श्रीमती ममता ने कृषि विभाग की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के बारे में जानकारी दी। सत्र में नेस्ले कम्पनी के क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री अहमद फजील तथा पारस न्यूट्रिशन कम्पनी के जोनल प्रबन्धक श्री अमित कौशिक ने भी पशुपालकों को आय में वृद्धि की उन्नत तकनीकों के बारे बताया। केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक डॉ. दिनेश जैन ने बताया कि प्रश्नोत्तरी विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गये।

संभाग के गौशाला प्रबंधकों का प्रशिक्षण संपन्न

वेटरनरी विश्वविद्यालय में गोपालन निदेशालय के सहयोग से संभाग के गौशाला प्रबंधकों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण 13 दिसम्बर को संपन्न हो गया। कुलपति सचिवालय में आयोजित समापन समारोह में मुख्य अतिथि महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. एस.एल. मेहता, विशिष्ट अतिथि कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, जोधपुर के निदेशक डॉ. एस.के. सिंह और विशिष्ट अतिथि राजुवास के पूर्व कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत, प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. ए.ए. गौरी एवं वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर के अधिष्ठाता प्रो. राकेश राव ने संभागियों को प्रमाण–पत्र प्रदान किए। डॉ. एस.एल. मेहता ने कहा कि गौसेवा अतुलनीय सेवा कार्य है। विश्वविद्यालय सेवा और ज्ञान के मंदिर है अतः गौशालाओं को इसका पूरा फायदा उठाना चाहिए। अटारी के निदेशक डॉ. एस.के. सिंह ने कहा कि पशु अनुत्पादक नहीं होता, इनके हर उत्पाद की उपयोगिता को सुनिश्चित किया जाए। राजुवास के पूर्व कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने भी सम्बोधित किया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि देशी गौवंश के संवर्द्धन और संरक्षण के लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा गोपालन विभाग के सहयोग से गौशाला प्रबंधकों के प्रशिक्षण आयोजित करके प्रबंधन, पशु उपचार की आधुनिक तकनीक, स्वास्थ्य व संतुलित आहार की विशेषज्ञ जानकारी दी जा रही है। कुलपति के विशेषाधिकारी और प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के प्रमुख अन्वेषक प्रो. आर.के. धूड़िया ने केन्द्रों की सेवाओं की जानकारी दी।

प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी चूरू में पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 5, 6, 9 एवं 21 दिसम्बर को गांव रामसरा, इन्दासर, श्योपुरा एवं मालसर गांवों में तथा दिनांक 23 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 136 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र में प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 4, 6, 7, 10 एवं 13 दिसम्बर को गांव मिर्जेवाला, भागसर, 2 एलएम, पक्की एवं नाहरावाली गांवो में एक दिवसीय तथा दिनांक 19–20 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 197 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 6, 10 एवं 12 दिसम्बर को गांव पिपेला, जैतावाडा एवं सांगड़ा गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 85 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाडनूं द्वारा 3, 4 एवं 5 दिसम्बर को गांव खुनखुना, गोदरास एवं रघुनाथपुरा गांवों में तथा 13–14 दिसम्बर केन्द्र परिसर में पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 114 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 6, 9, 11, 13, 16, 18 एवं 19 दिसम्बर को गांव डबालिया, आडीवाट, नवगारा, भागसिरा, कालाधुना, काटफला एवं पचरवाला गांवों में तथा दिनांक 2, 23 एवं 24 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 253 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 5, 7, 11 एवं 14 दिसम्बर को गांव पडौला, नगला खरबेरा, सिकन्दरा एवं मूडिया गंधार गांवो में तथा दिनांक 18 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 75 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 7, 9, 21, 23 एवं 24 दिसम्बर को गांव बोरखण्डी, सोडा, गणेशपुरा, डूंगरी कला

एवं हाडीकला गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 130 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर (बीकानेर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 2, 4, 7, 16 एवं 18 दिसम्बर को गांव गजनेर, काकड़वाला, खारी चानणान, भदेरन एवं कतरियासर गांवों में तथा 11 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 174 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी कोटा द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 11, 20 एवं 21 दिसम्बर को गांव कंवरपुरा, दिगोद एवं विजयपुरा गांवों में तथा 16 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 94 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 16, 17 एवं 23 दिसम्बर को गांव नयाखेडा, अमरपुरा एवं केरपुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 72 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 5, 12 एवं 17 दिसम्बर को गांव परऊवा, दरबई का पुरा एवं गरवापुरा गांवों में तथा 20 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 103 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 9, 11 एवं 13 दिसम्बर को गांव बूबानी, नोलखा एवं दांता गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 97 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, जोधपुर द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 9 एवं 12 दिसम्बर को गांव मांडियाई कलां एवं माडियाई खुर्द गांवों में तथा 17 एवं 20 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 89 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी झुंझुनूं द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 12, 16 एवं 23 दिसम्बर को गांव केड, भाटीवाड एवं सोटवारा गांवों में तथा 20 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 113 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के प्रशिक्षण शिविर

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) द्वारा 6, 16 एवं 17 दिसम्बर को गांव फेफाना, ढाणी आरियान एवं भूकारका गांवों में एक दिवसीय तथा 5, 9–10, 11–12, 19–20 एवं 23 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में प्रशिक्षण शिविरों में 229 किसानों ने भाग लिया।

पशु–पक्षियों को शीतलहर से बचायें

इस वर्ष दिसम्बर माह में सामान्य से बहुत ज्यादा सर्दी का प्रकोप रहा है। जिसकी वजह से आम जनजीवन भी प्रभावित रहा और साथ ही पशु–पक्षियों में भी कई स्थानों पर मृत्यु देखी गई है। दिसम्बर माह को देखते हुए नववर्ष जनवरी माह में भी काफी सर्दी पड़ने की संभावना है। ऊंचे पर्वतीय इलाकों में भारी बर्फबारी होने के कारण शीतलहर की संभावना अधिक है। तेज सर्दी में पशु–पक्षी तनावग्रस्त हो जाते है और उनसे प्राप्त होने वाले उत्पादन (दुग्ध, अण्डे इत्यादि) में अप्रत्याशित रूप से कमी हो जाती है। कम उत्पादन के अतिरिक्त पशु–पक्षियों के बीमार होने की भी प्रबल संभावना रहती है। अधिकांश पशु–पक्षी न्यूमोनिया से ग्रसित हो जाते है इसके अतिरिक्त कई विषाणुजनित रोग भी इस सर्दी में हो सकते है। इन संभावनाओं को देखते हुए पशुपालक को अपने पशु व पक्षियों का समुचित प्रबंधन करना आवश्यक हो जाता है। अतः पशुपालकों को निम्न बातों का अवश्य ध्यान रखना चाहिए:

1. पशुओं को रात के समय घर के अन्दर बांधे व दरवाजे व खिड़कियों पर टाट की पल्ली लगा दें।
2. इस मौसम में पशुओं को नहलाने की आवश्यकता नहीं है।
3. पशु को पीने के लिए गुनगुना पानी देवें।
4. अन्य मौसम की तुलना में गुड़–बांटा अधिक मात्रा में देना पशु के लिए अच्छा होगा।
5. पक्षीघर/मुर्गीघर में तापमान नियत्रिंत रखें अन्यथा पक्षियों में बहुत संख्या में मृत्यु हो सकती है।
6. पशुपालक यह ध्यान अवश्य रखें कि किसी भी हालत में पशुघर में धुंआ इकट्ठा न हो और स्वच्छ हवा का आदान–प्रदान अवश्य हो।
7. यदि पशु जुकाम या न्यूमोनिया से प्रभावित हो जाये तो उसे तुरन्त अन्य स्वस्थ पशुओं से अलग कर दें व पशुचिकित्सक से परामर्श लें।
8. खेत में काम करने वाले पशु को बहुत सुबह व देर शाम तक काम ना लें।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

घर के पिछवाडे में मुर्गी पालन : बेहतर आजीविका का स्त्रोत

हमारे भारत देश में जनसंख्या का बहुत बडा हिस्सा 72.2 प्रतिशत ग्रामीण क्षैत्रों में निवास करता हैं। भारत एक कृषि प्रधान देश है। मुख्यतः आजीविका का स्त्रोत कृषि है लेकिन प्राकृतिक आपदाओं की वजह से किसानो को नुकसान हो रहा है इसलिए किसान कृषि के साथ–साथ मुर्गीपालन को एक व्यवसाय के रूप में जोड़े तो उनके लिये फायदेमंद हो सकता है। इसलिए लघु एवं सीमान्त किसानों के लिये छोटे स्तर पर घर के पिछवाडे मे मुर्गीपालन एक आजीविका का स्त्रोत हो सकता है। पिछवाडे मुर्गीपालन में कम खर्चा व अधिक लाभ है। भारत में रहने वाले लोग वर्तमान में शाकाहारी से मांसाहारी की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। भारत में वर्तमान में मांस व अण्डे उत्पादन में वृद्धि हुई है वर्तमान में 63 अण्डे प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष एवं 2.2 किलो मांस प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष उपलब्ध है। अण्डे उत्पादन में भारत का तीसरा स्थान है तथा चिकन मांस में 6 वां स्थान है। पिछवाडे मुर्गी पालन में मुर्गियों को खुले में रखा जाता है। हमारे देश में कुपोषण एवं गरीबी की समस्या को दूर करने के लिये पारम्परिक मुर्गी पालन अथवा घर के पिछवाडे मुर्गी पालन की यह पद्धति पुराने समय से चली आ रही है। इस प्रकार के मुर्गी पालन में 20–30 मुर्गियों का समूह एक परिवार द्वारा पाला जाता है। बेकयार्ड मुर्गी पालन में मुर्गियों में रोग प्रतिरोधक क्षमता केसाथ– साथ विपरीत प्रतिकुल परिस्थितियों को सहन करने की क्षमता अधिक होती है। पिछले कई वर्षो से कुक्कुट पालन कृषि व्यवसाय का एक अभिन्न अंग बन चुका है लेकिन ग्रामीण क्षैत्रों में इसका विकास पूर्ण रूप से नही हुआ है।

लाभः–

1. गरीब व सीमान्त किसानों के लिये रोजगार का प्रमुख साधन है
2. जमीन की उपजाऊ क्षमता बढ़ जाती है
3. सबसे सरल व सस्ता व्यवसाय है
4. अधिक लाभप्रद व्यवसाय है
5. ग्रामीण क्षैत्र के लोगों का जीवन स्तर सुधारनें मे सहायक है

नस्ल का चुनावः–

पारम्परिक कुक्कुट पालन में वनराजा, ग्रामप्रिया, कृष्णा जे, नन्दनम, ग्राम लक्ष्मी आदि प्रजातियां उपयोग की जाती थी, इनकी वृद्धि दर व उत्पादन कम होने की वजह से वर्तमान में कुछ देशी, विदेशी एवं संकर नस्ले उपयोग में ली जाती है। रोड आइलेण्ड रेड, कडक नाथ, असील, प्लाइमोथ आदि का उपयोग किया जाता है किन्तु अधिक लाभ के लिये नयी प्रजातियां जैसे कैरी देवेन्द्रा, कैरी निर्भक, कैरी भयामा आदि नस्लों का उपयोग किया जाता है इनकी वार्षिक उत्पादन क्षमता औसतन 180–200 अण्डे की है।

आवास प्रबन्धनः–

सामान्यतया बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिगं में आवास की आवश्यकता नही होती है परन्तु मौसम की विषम परिस्थितियों एवं शिकारी जानवरो से मुर्गियों को बचाने के लिये आवास बनाना आवश्यक होता है इसके लिये घर के टूटे– फूटे भाग व खंडहर काम में लिये जाते है। आवास की लम्बाई पूर्व–पश्चिम दिशा में रखी जानी चाहिये। हवा तथा सूर्य के प्रकाश के लिये जाली लगाई जा सकती है। आवास की उचांई 4–5 फीट होनी चाहिये, आवास छायांदार पेड के पास बनाये ताकि गर्मियों में पक्षियों को छाया मिल सके।

स्थान की आवश्यकताः–

उम्र (सप्ताह)	फर्श स्थान (फीट)	भोजन स्थान (CM)	पानी स्थान (CM)
0–4	0.5	2.5	1.5
4–8	1.0	5.0	2.0
8–12	2.0	6.5	2.5

आहार व्यवस्थाः– पिछवाडे मुर्गीपालन में आहार का मूल्य कम होता है क्योंकि इसमे मुर्गियां अनाज के दाने , कीडे– मकोडे, घास की कोमल पत्तियां तथा घर की जुठन आदि खाकर अपना पेट भर लेती है। प्रायः यह देखा गया है कि मुर्गियों को एक विशेष प्रकार का ही अनाज दिया जाता है जिससे उनकी आवश्यकता की पूर्ति नही हो पाती है इसलिये उन्हे सन्तुलित आहार देना चाहिये जिसमें पर्याप्त मात्रा में कार्बोहाइड्रेट, वसा, प्रोटीन, विटामीन एवं खनिज लवण हो। अच्छी वृद्धि के लिये चूजों को अलग से 30–60 ग्राम प्रतिदिन प्रति चूजा दाना देना चाहिये। पूरक भोजन के रूप मे चूना व केलशियम उपलब्ध कराना चाहिये।

सन्तुलित आहार का उदाहरण

पीली मक्का– 60 प्रतिशत
मुंगफली की खली – 27 प्रतिशत
मछली व हड्डी का चूरा– 5 प्रतिशत
शीरा– 5 प्रतिशत
खनिज मिश्रण– 2 प्रतिशत
नमक– 1 प्रतिशत

आयु के अनुसार आहार मात्रा प्रतिदिन

2 माह तक – 50 ग्राम, 2–3 माह– 75 ग्राम, 3–4 माह – 100 ग्राम, 4–5 माह – 110 ग्राम, 5–6 माह – 130–145 ग्राम

एक से सात दिन तक के चूजों को कागज पर दाना देना चाहिये तथा फिर भोजन व पानी के लिये अलग– अलग पात्रों की व्यवस्था करनी चाहिये।

प्रजनन व्यवस्थाः–आम तौर पर यह देखा जाता है कि एक बार मुर्गी खरीदने के बाद हर बार उससे प्रजनन कराया जिससे इन के दुष्प्रभाव सामने आते है इससे उत्पादन एवं वृद्धि दर में कमी आती है तथा साथ ही प्रजनन क्षमता कम हो जाती है इसलिये इन्हे प्रतिवर्ष बदल देना चाहिये जिससे उत्पादन एवं प्रजनन क्षमता बढ़ जाती है।

टीकाकरणः बेकयार्ड मुर्गी पालन में ऐसी प्रजातियों को चुना जाता है जिनमें रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है उनमें टीकाकरण तथा अन्य बीमारियों की रोकथाम की बहुत कम आवश्यकता होती है। लेकिन फिर भी मुख्य बीमारियो जैसे मेरेक्स, रानीखेत, गुम्बरू आदि के टीके लगवाने चाहिये।

कुछ ध्यान देने योग्य बातें:–

1. मुर्गियां खरीदते समय उनका उचित परिक्षण करना चाहिये कि वह किसी रोग से ग्रसित ना हो।
2. समय–समय पर अवांछनीय ,अनुपयोगी कम उत्पादन वाली मुर्गियों को समूह से अलग करते रहना चाहिये।
3. दो मुर्गी फार्म के बीच में पर्याप्त दूरी होनी चाहिये।
4. किटाणुओं से बचाव के लिये समय–समय पर मुर्गी फार्म की मिट्टी बदलते रहना चाहिये।

पिछवाडे मुर्गी पालन मे 30 मुर्गी व 10 मुर्गे का आर्थिक विश्लेषण

कुल व्यय =1600+9000+2000+800+850 = 14250 रूपये

30 मुर्गी व 10 मुर्गे से प्राप्त आय प्रतिवर्ष

मुर्गी :– प्रति मुर्गी 100 अण्डे 6 रूपये प्रति अण्डा

30 मुर्गी 3000 अण्डे से आय = 3000X6 = 18000
30 मुर्गी वजन 3/– किलो बिक्री = 15000
मुर्गा :– 10 मुर्गा वजन 2/– किलो बिक्री = 4000
कुल आय = 37,000/–

कुल वार्षिक आय = 37,000
कुल व्यय = 14,250
लाभ = 22,750/–

–ड़ॉ. मनीश कुमार नागर एवं ड़ॉ. मुकेश चन्द शर्मा
वेटरनरी कॉलेज, नवानियां, वल्लभनगर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–जनवरी, 2020

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	जयपुर, धौलपुर, बीकानेर
एम्फीस्टोमियेसिस	गाय, भैंस	भरतपुर, उदयपुर, कोटा, धौलपुर
फेसियोलियेसिस (यकृत कृमि)	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	भरतपुर, कोटा, धौलपुर, डूँगरपुर, हनुमानगढ़, सवाई–माधोपुर, सीकर, बूंदी
गलघोंटू	गाय, भैंस	जयपुर, चित्तौड़गढ़, पाली, टौंक, भरतपुर, उदयपुर, अलवर, भीलवाड़ा, दौसा, अजमेर
लंगड़ा बुखार	गाय, भैंस	श्रीगंगानगर, भरतपुर, हनुमानगढ़, अलवर, भरतपुर
मुँहपका–खुरपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	दौसा, जयपुर, अनूपगढ़, धौलपुर, बीकानेर, अलवर, अजमेर, सवाईमाधोपुर, भीलवाड़ा
बबेसियोसिस (खून मूतना)	गाय, भैंस	धौलपुर, बून्दी, डूँगरपुर, बीकानेर, कोटा
माता रोग (चेचक)	भेड़, ऊँट, बकरी	बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ, जैसलमेर, पाली, सिरोही, सीकर
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	नागौर, जोधपुर, बीकानेर, हनुमानगढ़, जैसलमेर, श्रीगंगानगर, चूरू, सीकर, उदयपुर, पाली, सिरोही
एनाप्लाज्मोसिस	गाय	भरतपुर, सीकर, जयपुर
न्यूमोनिक पास्चुरेल्लोसिस	गाय, भैंस	सीकर, नागौर, अलवर, झुंझुंनु, सवाईमाधोपुर
जोहन्स रोग	भेड़, गाय	बीकानेर, जैसलमेर, श्रीगंगानगर
सी.सी.पी.पी. (एक प्रकार का न्यूमोनिया)	भेड़, बकरी	बीकानेर, जैसलमेर, श्रीगंगानगर, धौलपुर, जोधपुर, अजमेर
रानीखेत रेग	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा
इन्फेक्शियस ब्रोंकाइटिस	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. राकेश राव, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, अपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, राजुवास, बीकानेर।
फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183, टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

एलोवीरा में जीवन का मिठास ढूंढा परलीका के युवा प्रगतिशील किसान अजय स्वामी ने।

आज डेढ दशक की कड़ी मेहनत और लगन का ही परिणाम है कि नेचुरल हेल्थ केयर संस्था के प्रधान अजय स्वामी एलोवेरा जूस व अन्य प्रोडक्ट से हनुमानगढ जिले के चमकते सितारे बन गऐ। हनुमानगढ जिले की नोहर तहसील के साहित्यिक गांव के नाम से विख्यात परलीका में जन्में अजय स्वामी कोई कहानीकार या गीतकार से कम नहीं आंके जा सकते । 28 वर्षीय अजय हालांकि आठवीं तक स्कुल जा पाए मगर उनका एलोवेरा जूस की संघर्ष भरी कहानी। अजय ने बताया मेरे मन में बचपन से ही कुछ चुनौतीपूर्ण करने की ललक थी। इस दौरान कृषि विज्ञान केन्द, नोहर के सम्पर्क में आया एवं मुझे वहां से औषधीय फसलों की खेती व उनके प्रसंस्करण की प्रेरणा व जानकारी प्राप्त हुई। वहीं से एलोवेरा की खेती व ज्यूस बनाने की भी प्रेरणा मिली। अजय परम्परागत खेती से होने वाली आमदनी की परवाह न करते हुए भादरा तहसील के मुन्सरी गांव में अपने मामा के यहां दो बीघा में एलोवेरा की खेती की। फसल तैयार होने में तीन वर्ष का समय लगा। सभी लोगों ने अजय का हौसला कमजोर किया कि तीन साल में छः फसलें हो जाती, एलोवेरा में ऐसा क्या मिलेगा। अजय ने कृषि विज्ञान केन्द्र के अधिकारियों व वैज्ञानिकों से इस सम्बन्ध में बात की। वहां से अजय को संबल मिला और वह इस दौरान कई राज्य स्तरीय, जिला स्तरीय कृषि प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने लगा । आज यह युवा दो बीघा एलोवेरा से शुरू की खेती को राजस्थान के कई स्थानों पर कई मुरबों में करवाता है। वहीं घरेलू मिक्सी से शुरू हुई यात्रा स्टील की बड़ी मशीन तक पहुंच गई है। आज लगभग 30 कंपनियों को माल तैयार करके सप्लाई करते हैं। अजय के उत्पाद में एलोवेरा ज्यूस, आंवला ज्यूस, त्रिफला ज्यूस, गिलोय ज्यूस, करेला ज्यूस, एलोवेरा साबुन, एलोवेरा क्रीम, एलोवेरा भौंपू, शिकाकाई शैंपू, हेयर पाउडर, एलोवेरा, एलोवेरा स्किन जैल, शैंपू, क्रीम, साबुन, दर्द निवारक तेल, आंवला कैंडी, आंवला ज्यूस, त्रिफला ज्यूस आदि कई उत्पाद के साथ–साथ देसी फोफलिया, सांगरी आदि सब्जियां, आचार व बड़ी, पापड़ आदि विभिन्न खाद्य उत्पादों का उत्पादन भी कर रहे हैं। गौरतलब है कि बारमंडीसिस किस्म के एलोवेरा का ज्यूस अमेरिका में तेरह सौ रूपए प्रति लीटर के किसाब से मिलता है वहीं भारत में अजय मात्र रू. 200 में उससे अच्छी गुणवत्ता के साथ लोगों को दे रहे है। विभिन्न मेलों के दौरान भी इनकी स्टॉल जिला व राज्य स्तर पर काफी बार प्रथम स्थान पर रह चुकि है तथा इनके उत्कर्श कार्य के लिए दो बार जिला कलेक्टर तथा राजूवास बीकानेर के कुलपति प्रो.(डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत भी इन्हें सम्मानित कर चुके है। **सम्पर्क– अजय स्वामी**, गांव परलिका (मो. नं. 9672682565)

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

समेकित पशु रोग प्रबंधन : पशु रोगों से बचाव का उपाय

प्रिय, किसान और पशुपालक भाइयों और बहनों !

नए वर्ष 2020 का आगमन आप सब के लिए सुखी, समृद्धि और लाभकारी रहें, ऐसी मैं मंगलकामना करता हूँ। समेकित पशु रोग प्रबंधन करना पशु रोगों से होने वाले नुकसान से बचाव का एकमात्र उपाय है। पशु स्वास्थ्य में कोई भी परिवर्तन जैसे चारा खाना, सुस्त रहना, गोबर पतला या गाढ़ा करना, उठने में असमर्थ होना, जुगाली बन्द करना, मजल व नथुने शुष्क होना आदि तमाम लक्षण पशु रोग को परिलक्षित करते है। पशुओं में रोग दो तरह के हो सकते हैं संक्रामक रोग, ये रोग किसी न किसी जीवाणु, विषाणु या रक्त परजीवी से होते हैं। इन रोगों में पशुओं को तेज बुखार हो जाता है तथा तुरन्त इलाज न मिलने की स्थिति में पशु की मृत्यु भी हो सकती है। इन रोगों का बचाव टीकाकरण से संभव है। जैसे गल–घोंटू, संक्रामक गर्भपात, खुरपका–मुंहपका इत्यादि।

पशु को संक्रामक रोग हो जाने पर : बीमार पशु को स्वस्थ पशु से अलग करके चारे–पानी की व्यवस्था करे। पशु की लार एवं अन्य स्राव के सम्पर्क में आने पर पशुपालक को अपने हाथ साबुन से धोने के बाद ही स्वस्थ पशुओं के सम्पर्क में आना चाहिए। संक्रामक गर्भपात की स्थिति में भ्रूण (अविकसित बच्चे एवं जैर) को कुत्तों के खाने से बचायें। इन सभी को गहरे गड्ढे में डालकर उपर बिना बुझा चुना एवं नमक डाल देवें। पशु के सम्पूर्ण रूप में ठीक हो जाने तक 3–5 दिन उपचार करवायें। बीमार पशु को खाना चारा देना, दूध दूहना आदि सभी प्रक्रिया सबसे अन्त में करें। दूसरा असंक्रामक रोग, ये पशु रोग मुख्यतः खाने में विशाक्त (जहरीला) पदार्थ आने या लम्बे समय तक पशु को सम्पूर्ण पशु आहार, खनिज लवण आदि न मिलने से या अधिक मात्रा में पशु आहार खाने से हो सकते हैं। जैसे आफरा, कीटोसिस, अपच, रंतौधी रोग, अखाद्य पदार्थ जैसे प्लास्टिक, रस्सी आदि पशु के द्वारा खाना (पाइका) मुख्य है। पशुओं में चारे को पचाने के लिए अलग से आमाशय होता है जिसे रूमेन कहते है। इस रूमेन में कई लाख जीवाणु होते हैं जो कि चारे को पशु के लिए पचाते हैं। अगर हम अचानक पशु के आहार में परिवर्तन कर देते हैं तो ये जीवाणु उसके अनुसार ढल नहीं पाते एवं चारा पचना बन्द हो जाता है। जिससे आफरा एवं अपच, दस्त लगना जैसी कई समस्यायें हो जाती है। इस परिस्थिति में बचने के लिये पशु के खाने पीने में अचानक परिवर्तन कभी न करें। संतुलित पशु आहार नियमित रूप से देवे। जिसमें जौ, चापड़, दाल चूरी, गुड़, खल, कपासिया, नमक तथा खनिज लवण आदि शामिल होना चाहिए। कभी भी एक तरह का पशु आहार यानि केवल जौ या चूरी न दें। विषाक्तता से पशु को बचाना चाहिए इसमें खास तौर से चिंचड़े मारने की दवा लगाने में सावधानी बरतनी चाहिए। बछड़ों को कभी भी ये दवा न लगाये। चिंचड़ों को मारने के लिए खेत में सब्जियों पर छिड़काव करने वाली दवाइयां कभी न लगाये। चिंचड़ों की रोकथाम के लिये पशुचिकित्सक की सलाह के अनुसार दवा लगायें।

–प्रो.(डॉ.)अकबर अली गौरी, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414431098

मुस्कान !

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

माह के प्रथम गुरूवार एवं तृतीय गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **जनवरी 2020** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। पशुपालक भाई उक्त दिवसों को मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर लाभ उठाएं।

वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
डॉ. राजेश नेहरा **9461504858** पशुपोषण विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	सर्दियों के मौसम में पशुओं का आहार प्रबंधन	02.01.2020
प्रो. बसन्त बैस **9413311741** विभागाध्यक्ष, पशुधन उत्पादन एवं तकनीक विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	देशी गौवंश दुग्ध एवं दुग्ध उत्पादों का महत्व एवं मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव	16.01.2020

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी
संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
डॉ. अतुल शंकर अरोड़ा
प्रो. (डॉ.) ए. के. कटारिया
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। **1800 180 6224**